5

समाज, समुदाय, संघ और संस्था

समाजशास्त्र समाज का एक विज्ञान है जो मनुष्य के जीवन और उसके कार्यों को समझने के लिए कुछ आधारभूत इकाइयों पर प्रकाश डालता है। ये इकाइयाँ व्यक्ति के जीवन और सामाजिक प्रक्रियाओं के बीच संबंधों को समझने के लिए आधार प्रदान करती हैं। इस पाठ में हम समाजशास्त्रियों द्वारा प्रयुक्त कतिपय आधारभूत अवधारणाओं की चर्चा करके सामाजिक जीवन को समझने का प्रयास करेंगे वे हैं: 1) समाज, 2) समुदाय 3) संघ 4) संस्था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- समाज और समुदाय की अवधारणा और परिभाषा को समझा सकेंगे;
- समाज और समुदाय के बीच समानता और असमानता को बता सकेंगे;
- संघ और संस्था की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- संघ और संस्था के बीच संबंध और अंतर बता सकेंगे;
- सामाजिक जीवन के अध्ययन में इन अवधारणाओं का महत्व समझा सकेंगे।

5.1 समाज क्या है?

समाज दैनिक जीवन में प्रयुक्त एक विशिष्ट अर्थ वाला परिभाषिक शब्द है। एक साधारण व्यक्ति समाज को, सामान्यत: व्यक्तियों का समूह या समुच्चय के रूप में

Notes

परिभाषित करता है। पर समाजशास्त्र में इस शब्द का अलग अर्थ में प्रयोग होता है। यह मात्र कई व्यक्तियों का संचित संगठन नहीं है। यह उनके बीच बन रहे संबंधों के योग की ओर संकेत करता है। सामान्य अर्थ में, समाज मूर्त वस्तु के रूप में समझा जाता है, जहाँ कि समाजशास्त्र में यह अमूर्त्त अस्तित्व के रूप में समझा जाता है। यह एक मानसिक संरचना है, जिसे हम दैनिक जीवन में अनुभव कर सकते हैं किंतु देख नहीं सकते। अपनी पुस्तक 'समाज' में मैक ईवर और पेज परिभाषित करते हैं: "समाज अनेक समूहों, तथा प्रतिभागों, मानवीय व्यवहारों तथा उन्मुक्तताओं के नियंत्रण की प्रयुक्तियों एवं अधिकारों की प्रविधि और पारस्परिक सहायता की एक पद्धति है। इस निरन्तर परिवर्तनशील, जटिल पद्धति को ही हम समाज कहते हैं। यह सामाजिक संबंधों का जाल है, और यह निरंतर गतिशील और परिवर्तनशील है।"

इस परिभाषा से प्रतिभाषित होता है कि समाज सामाजिक संबंधों का संजाल है। एक व्यक्ति दूसरों से विवाह, पड़ोस, जाति, पेशा, धर्म, राजनीतिक दल, और समान समूह (मित्र समूह) आदि बंधनों से संबंधित होता है। फिर भी, एक व्यक्ति इन भिन्न बहुविधि संबंधों के माध्यम से कई स्तरीय समूहों का अनिवार्य अंग बन जाता है। ये संबंध बिना उद्देश्य के नहीं होते हैं। बल्कि ये प्रतिरूप होते हैं। इसीलिए, समाजशास्त्री समाज को सामाजिक संबंधों के प्रतिरूप के रूप में परिभाषित करते हैं जो इसके सदस्यों की पारस्परिक अन्त:क्रियाओं से बनता है।

समाज के लक्ष्य

व्यक्ति की सामूहिकता ने एक लंबी कालावधि के दौरान समाज का निर्माण किया है। समाजशास्त्रियों ने समाज के कतिपय लक्षणों को पहचाना है। वे हैं:

1. समानता और विभेदीकरण
2. एक दूसरे पर आश्रित होना (आन्तनिर्भरता); और
3. सहयोग तथा संघर्ष।

1. पहले स्थान पर ऐसे व्यक्तियों का संचयन होना चाहिए जो आपस में समानता की भावना का आदान-प्रदान करते हों। कोई भी समाज तब तक अस्तित्व में नहीं आ सकता जब तक कि इसके सदस्य आपस में एक दूसरे को एक समान न समझते हों। परिवार के सदस्यों और संबंधी-समूहों, एक ही गाँव या नगर से संबंध रखने वाले लोगों, और एक ही जाति के सदस्यों में, सामान्यत:, इसी समानता की भावना रहती है। फिर भी प्रथम समानता मुखाकृति की होती है। मनुष्य पशुओं की अन्य प्रजातियाँ को मिलाकर मानव समाज नहीं बना सकता।

फिर भी, हम यह नहीं कह सकते कि समाज विभेदीकरण से रेखांकित नहीं है।

Notes

समाज के सदस्य एक दूसरे से जाति, वर्ग, पेशा और शिक्षा आदि में एक दूसरे से अलग होते हैं। यहाँ तक कि परिवार के अंदर सभी सदस्य एक दूसरे से लिंग, आयु, व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और व्यक्तिगत पसंद में अलग होते हैं। फिर भी, ये अंतर एक दूसरे को इस तरह से जोड़ते हैं कि परिवार में स्थिरता बनी रहती है। इसी के समान सिद्धान्त बड़े (वृहत्) समाज के लिए भी प्रयुक्त होता है जहाँ विभेद समानता के अधीन होते हैं, जो सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के लिए परम आवश्यक होता है।

2. अन्तर्निरभरता (एक दूसरे पर आश्रित होना) समाज का दूसरा लक्षण है। समाज के सदस्य इसके सुचारु रूप से संचालन के लिए एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। एक पारंपरिक गाँव में या आपके पड़ोस में, भिन्न-भिन्न जाति-समूहों के लोग दैनिक जीवन में एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। उदाहरण के तौर पर, धोबी, बढ़ई, मोची, लोहार, बस-संचालक, ब्राह्मण, सफाई-कर्मचारी सभी अपना काम करते हुए देखे जाते हैं, फिर भी एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। कोई भी व्यक्ति अकेले ही सारा काम नहीं कर सकता। इस लिए व्यक्ति समाज में अच्छी तरह से रहने के लिए एक दूसरे पर आश्रित होते हैं।

3. सहयोग समाज का अन्य आवश्यक लक्षण होता है। कोई भी समाज तब तक अस्तित्व में नहीं आ सकता या लगातार बना रह सकता है जब तक इसके सदस्य एक दूसरे को सहायता न पहुँचाते हों। समाज के हर स्तर पर सहयोग प्राप्त होता है जैसे कि व्यक्तिगत आपसी संबंध-

1) पति-पत्नी और अन्य पारिवारिक सदस्यों के बीच।

2) पड़ोसियों के बीच; और

3) बृहत् समाज के स्तर पर।

4. जैसा कि आप जानते हैं कि जब तक आप अपने भाई और बहन से सहयोग करते रहते हैं आपको पारिवारिक मामलों में समस्या नहीं होती। दूसरी तरफ, आप जानते हैं कि संबंधों में टकराव का भी एक तत्व होता है। उदाहरण के लिए, आप और आपका भाई आपके आभिभावक द्वारा हाल ही में खरीदे गए कमीज को पसंद करते हैं। आप और आपका भाई दोनों उसे पाने के लिए तर्क कर सकते हैं। फिर भी, आपके अभिभावक जल्द ही इस टकराव का समाधान कर लेते हैं। ठीक उसी तरह, सहयोग और संघर्ष (टकराव) समाज में संबंधों को दर्शाते हैं। समाज के एक आवश्यक लक्षण के रूप में संघर्ष बृहत् स्तर पर व्याख्यायित किया जा सकता है। यदि समूह में व्यक्तियों के हित एक दूसरे के विपरीत हों तो उनके संबंध टकराव की ओर मुड़ सकते हैं। एक जमींदार और भूमिहीन के बीच संघर्ष को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं, कि सहयोग हर तरह से अधिक महत्वपूर्ण है।

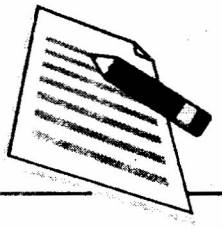

Notes

पाठगत प्रश्न 5.1

एक वाक्य में उत्तर दें;

1. समाज को परिभाषित करें।

   ---

2. समाज के अस्तित्व के लिए 'समानता' और 'असमानता' में से किसका महत्व अधिक है।

   ---

3. पति-पत्नी के संबंध सामाजिक संबंधों का एक रूप हैं। क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

5.2 समुदाय

समाज एक विचार है, समुदाय एक मूर्त अस्तित्व है। समाजशास्त्रियों के अनुसार, 'जब भी कभी किसी समूह का सदस्य, छोटा हो या बड़ा इस तरह से साथ-साथ रहते हैं कि वे सामान्य जीवन की आधारभूत स्थितियों में सहभागिता करते हैं, तो हम इस समूह को समुदाय कहते हैं।" इस तरह, एक समुदाय एक भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों के समूह को कहते हैं। वे एक ही भौतिक वातावरण में रहते हैं और सामान्य जीवन की आधारभूत स्थितियों में साथ-साथ रहते हैं। एक पड़ोस या गाँव समुदाय का बहुत ही अच्छा उदाहरण है।

5.2.1 समुदाय के लक्षण

(i) समुदाय व्यक्तियों के समूह या समुच्चय को कहते हैं।

(ii) ये एक ही इलाके से संबंधित होते हैं।

(iii) समुदाय के सदस्यों में जबर्दस्त सामुदायिक भावना होती है अथवा समानता का भाव तथा अपनत्व की भावना भी होती है।

(iv) बहुत लंबे समय के दौरान लगातार साथ रहने से लोगों के समूह से समुदाय की रचना होती है।

(v) इसीलिए, यह अधिक स्थायी या सहिष्णु होता है अपेक्षाकृत उस समूह के जो किसी उद्देश्य से रहित होता है।

(vi) समुदाय बृहत्तर लक्ष्यों के लिए कार्यरत रहता है।

(vii) एक समुदाय साधारणतया एक विशिष्ट नाम से जुड़ा हुआ होता है।

5.2.2 समाज और समुदाय में समानता

1) दोनों स्वाभाविक रूप से बने सामाजिक समूह हैं, किंतु एक समुदाय मस्तिष्क में विशिष्ट रुचि को लेकर भी बनाया जा सकता है।

2) दोनों बृहत्तर उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

3) दोनों समूहों के सदस्यों में अपनेपन की भावना निहित होती है।

5.2.3 समाज और समुदाय में अंतर

समाज

1. इसमें लोगों के बीच स्थापित प्रत्येक संबंध सम्मिलित, होता है। वे संबंध क्षेत्रीय सीमाओं से परे होते हैं।

   उदाहरण के लिए भारतीय लोग पूरे विश्व भर में फैले हुए हैं और वे अनुभव करते हैं कि वे भारतीय समाज के अंग हैं, यहाँ पर सीमा रेखा खींचना उनके लिए अर्थहीन है।

2. यहाँ पर अपनेपन की भावना है, किंतु यह समुदाय की अपेक्षा कम मुखरित होती है।

3. समाज एक अमूर्त मानसिक संरचना है।

समुदाय

1. साधारणतया समुदाय, निश्चित क्षेत्र से संबंधित होता है। उदाहरण के लिए लंदन के साउथ हॉल में रहने वाले भारतीय साउथहॉल के भारतीय समुदाय कहे जा सकेंगे।

2. अपनेपन की भावना मजबूत होती है। वे परस्पर एक दूसरे के नजदीक अनुभव करते हैं। यदि समुदाय के सदस्य के रूप में उनकी कोई आलोचना होती है तो उनमें अधिक तीव्र प्रतिक्रिया होती है।

3. समुदाय एक मूर्त अस्तित्व है। फिर भी, यह कहा जा सकता है कि उनके बीच समानता और अंतर है, पर वास्तविकता में वे दोनों एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

5.2.4 समुदाय के प्रकार

जर्मनी के एक समाजशास्त्री एफ, टोनीज ने दो पारिभाषिक शब्द प्रयोग किए थे, जेमिन्शाफ्ट, जिसका अर्थ समुदाय होता है और जेसेल साफ्ट जिसका अर्थ समिती होता है। मानव समाज में कई प्रकार के समूहों को इंगित करने के लिए उन्होंने इन

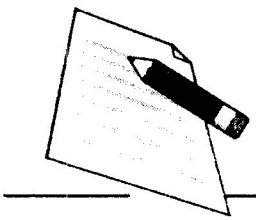

Notes

शब्दों का प्रयोग किया था। समुदाय कई प्रकार के होते हैं, उनमें से चार साफ तौर पर पहचाने जा सकते हैं। वे इस प्रकार हैं-

(i) ग्रामीण

(ii) शहरी

(iii) राष्ट्रीय

(iv) विश्वस्तरीय

फिर भी, यह कहा जा सकता है कि यद्यपि उनके बीच समानता और विभेद हैं, फिर भी, वास्तविकता में वे एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

5.2.5 भारत में सामाजिक जीवन

भारत ग्रामीण समुदाय से निर्मित देश रहा है। ऐतिहासिक रूप से, ये समुदाय निम्नांकित विशेषताओं से पहचाने जाते हैं

(i) कृषि आधारित अर्थ-व्यवस्था।

(ii) शांति, सहजता और सरलता।

(iii) परंपरा और प्रथा-बद्ध आचरण।

(iv) गरीबी और निरक्षरता।

(v) पारंपरिक पंचायती संरचनाएँ।

(vi) जाति आधारित श्रम-विभाजन और अन्तर-निर्भरता।

ब्रिटिश शासन के प्रभाव से, जनसंख्या विस्फोट, शिक्षा, आधुनिकीकरण और औद्योगिकरण आदि पारंपरिक समुदाय संरचनाएँ कमजोर पड़ गईं। 'वृहत् स्तर' पर अपने पन की भावना विलीन हुई है। लोगों के जीवन पर परंपराओं और प्रथाओं द्वारा पड़ने वाले प्रभावों में भी परिवर्तन आया है। ग्रामीण समुदाय भारतीय संदर्भ में बहुत समय तक अलग-थलग नहीं रहा है। आज सुदूर वर्ती गाँव भी, विश्व समुदाय से, दूरसंचार माध्यमों, परिवहन-व्यवस्थाओं और बाजारों द्वारा जुड़ गए हैं।

पाठगत प्रश्न 5.2

सही उत्तर पर टिक मार्क लगाएँ:

1. निम्न में से कौन-कौन समाज और समुदाय के बीच अंतर बताने वाले तत्व हैं?

   a) निश्चित इलाका b) लोगों का एक समूह।

c) रुचि की समानता d) एकता की भावना।

2. निम्न में से समुदाय के सही लक्षणों को चुने।

a) अमूर्त b) गतिशील

c) मूर्त d) उपरोक्त में से कोई नहीं

3. निम्न में से कौन समुदाय का उदाहरण नहीं है?

a) शहर b) गाँव

c) नगर d) इनमें से कोई नहीं।

5.3 संघ

संघ उन लोगों का एक समूह होता है, जो एक साथ हो जाते हैं और विशिष्ट लक्ष्यों या उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संगठित होते हैं। कभी-कभी ऐसे संगठनों के लक्ष्य सीमित संख्या में होते हैं। उदाहरण के लिए, आपने अपने आस-पास मुहल्ला सुधार समिति के कार्यों को या अपने पड़ोस के क्रिकेट क्लब को देखा होगा। इस तरह के कई संघ होते हैं जैसे स्वयंसेवी स्वैच्छिक संघ, म्यूजिक क्लब या ट्रेड यूनियन।

5.3.1 संघ के लक्षण

i) यह व्यक्तियों का एक समूह होता है।

ii) लोग संगठित होते हैं।

iii) संघ के कार्यों (क्रियाकलापों) को चलाने के लिए कई नियम और अधिनियम होते हैं।

iv) ये लोग कुछ विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सारे कार्यक्रम करते हैं।

5.3.1 समाज, समुदाय और संघ में अंतर

समाज और समुदाय

1. ये सहज सामाजिक समूह होते हैं।
2. दोनों अधिक स्थिर, सतत् और लंबे इतिहास वाले होते हैं।
3. समाजिक संबंधों की एक पद्धति के रूप में समाज जीवित रह सकता है।
4. समाज प्रथा, परंपरा और अलिखित कानूनों के द्वारा कार्य कर सकता है।

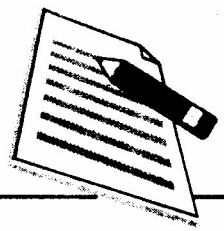

Notes

संघ

1. लोग मस्तिष्क में विशिष्ट उद्देश्य लेकर इकट्ठे होते हैं।
2. ये थोड़े समय के लिए हो सकते हैं।
3. समूह सदस्यों के साथ महत्ता और उद्देश्य की विशिष्टता जुड़ी होती है।
4. अधिकतर लिखित कानूनों और नियमों से कार्य होता है।

पाठगत प्रश्न 5.3

a) निम्न में से कौन एक संघ का एक उदाहरण है।

i) भारतीय समाज ii) ब्राह्मण जाति

iii) महिला क्लब iv) हिप्पियों का समूह

B) समाज और संघ में एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि उत्तरवर्ती में निम्नांकित होता है:

i) अलिखित नियम ii) लिखित नियम

c) निम्न मे से किस में क्षेत्रीय आधार है?

i) समाज ii) समुदाय

iii) संघ iv) समूह

d) निम्न में से कौन लोगों के द्वारा विशिष्ट लक्ष्य हेतु बनाया गया है?

i) संघ ii) समाज iii) समुदाय

5.4 संस्था

क्या आपको याद है कि हमने पहले समाज शब्द के साधारण और समाज शास्त्रीय अर्थ के बीच अंतर करने की कोशिश की है। उसी तरह से, जब संस्था की अवधारणा हमारे सामने आती है तो हमारे पास इसके दो अर्थ मौजूद हैं।

i) संस्था शब्द से लोग आम तौर पर संगठन का अर्थ समझ लेते हैं, उदाहरण के तौर पर चिकित्सालय और विद्यालय को संस्था कहते हैं।

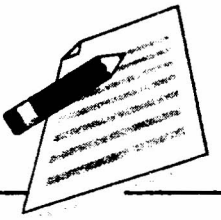

Notes

ii) फिर भी, समाजशास्त्र में संस्था का अर्थ अलग है।, यह परिभाषिक शब्द कार्यों के करने के ढंग को समझने के लिए प्रयुक्त होता है।

संस्था विविध क्रिया-कलापों को करने के लिए स्थापित या मान्य आचरण-संहिता से संबंधित होती है। वह मानव क्रिया-कलापों के लिए नियमों नियमावलियों से दिशा-निर्देश प्राप्त करते हैं। संस्था मानवीय कार्यों की रूप-रेखा होती हैं। क्या आपने अनुभव किया है कि आप चर्च/मंदिर /मस्जिद में पूजा के लिए क्यों जाते हैं। वास्तवमें, लोग अचेतन रूप से पूजा पद्धति में उस आचरण-संहिता को आत्मसात करते हैं, जिसे समाज में धार्मिक संस्थाएँ क्रियान्वित करती हैं। आप उन्हें देख नहीं सकते किंतु वे वहाँ होते हैं जो आपके व्यवहार के लिए 'करणीय' और 'अकरणीय' नियम प्रदान करते हैं।

प्रत्येक संगठन में कुछ प्रयोग, नियम और प्रक्रियाएँ होती हैं। प्रक्रिया के ये रूप संस्थाएँ कहलाते हैं। ये समाज के द्वारा पहचाने और स्वीकार किए जाते हैं और वे व्यक्ति और समूह के बीच संबंधों को व्यवस्थित करते हैं। यदि नियम और प्रक्रियाएँ संस्था कहलाती हैं, तब व्यक्ति स्वयं संघ से संबंधित होते हैं। इसलिए, संघ और संस्था के बीच अंतरों में से एक अंतर यह होता है कि प्रथम नियम और प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा मानवीय घटक का प्रतिनिधित्व करता है।

पति और पत्नी दोनों मिलकर एक परिवार को स्वरूप देते हैं जो संघ का एक उदाहरण है। उनके पास बच्चे होते हैं और वे सामाजिक कर्त्तव्यों को सतत् निभाते रहते हैं। किंतु परिवार किस प्रकार संचालित होता है? यह बृहत् स्तर पर समाज की संस्थानिक संरचना पर निर्भर करता है जिसका यह अर्थ होता है कि चीजों के करने के तरीके कौन-कौन हैं? इसलिए परिवार के सदस्यों को एक दूसरे के प्रति आचरण में एक प्रतिमान रखना होता है, जिसे आप दूसरे परिवारों में भी देखते हैं। उदाहरण के लिए यह आदर्श है कि आभिभावक बच्चों के साथ तथा एक दूसरे के साथ किस प्रकार का आचरण करते हैं। अब आप समझ सकते हैं कि एक विद्यालय, संघ और संस्था दोनों कैसे है? इसका मतलब यह है कि विद्यालय विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर अस्तित्व में आता है किंतु समाज में विद्यालय की भूमिका और प्रकार्य एक संस्था के होते हैं। इसका यह अर्थ है कि विद्यालय के माध्यम से हम समाज में 'क्या करें' या 'क्या न करें' को आत्मसात् करते हैं।

इसलिए, इन उदाहरणों से हम पाते हैं कि साधारणतया संघ के कुछ स्वरूप होते हैं जिससे वह ठोस आकार ले सकता है। फिर भी, संस्था के ठोस रूप नहीं होते हैं। वे अमूर्त हैं।

कुछ समाजशास्त्रियों के अनुसार, संस्थाएँ समाज के मूल अंग हैं। वे सभी संस्कृतियों और समाजों में पाई जाती हैं। कुछ संस्थाएँ समाज के अस्तित्व की आधारशिला होते

Notes

हैं। कतिपय समाजशास्त्री इन्हें प्राथमिक संस्थाएँ कहते हैं। सभी समाजों में ये प्राथमिक संस्थाएँ पाई जाती हैं। वे संख्या में छह हैं:

i) आर्थिक संस्थाएँ (जैसे कि कृषि, उद्योग या कोई अन्य व्यवसाय)

ii) समाजिक संस्थाएँ (जैसे कि परिवार, विवाह और रिश्तेदारी)

iii) राजनीतिक संस्थाएँ

iv) शिक्षा या समाजीकरण

v) धर्म;और

vi) अभिव्यंजक संस्थाएँ जैसे संगीत, नृत्य, ललित कलाएँ और साहित्य आदि। वे सभी मानव समाजों में पाई जाती हैं।

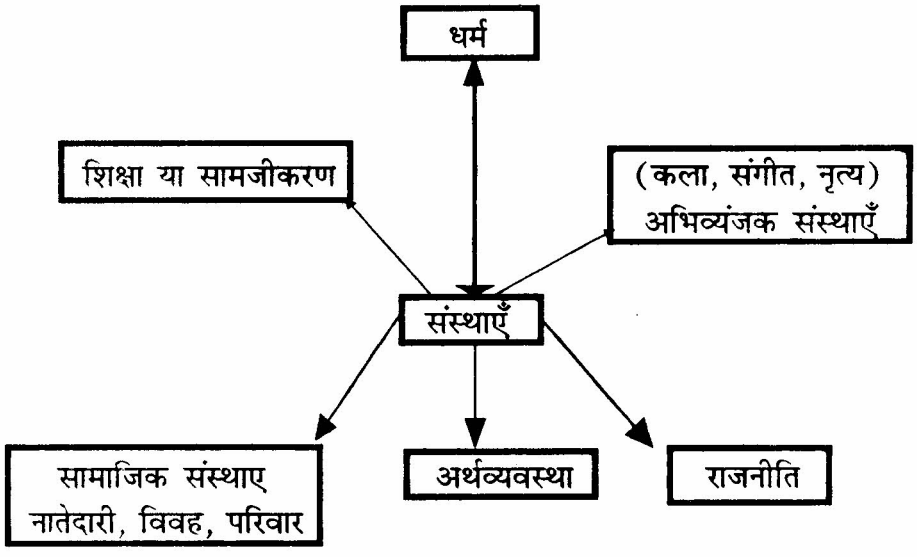

अंत में हम कह सकते हैं संस्थाएँ सभी समाजों और संस्कृतियों के सामाजिक जीवन की मानक कार्य प्रणाली को प्रस्तुत करती हैं।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. निम्न में से संस्था के एक उदाहरण को पहचानें:
   (i) क्रिकेट क्लब (ii) चिकित्सालय (iii) जेल (iv) धर्म
2. निम्न में से जिसे संस्थाएँ निरूपित करती हैं उसे टिक (✓) कीजिए
   (i) नियम और प्रक्रियाएँ (ii) मानवीय पहलू (iii) मूर्त्तता

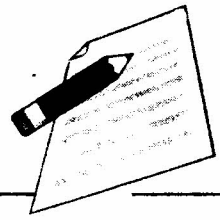

Notes

3. संस्थाएँ सामाजिक जीवन को संचालित करती हैं। आप इस कथन से सहमत हैं या नहीं? हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए।

4. सही चयन पर टिक करें। निम्नांकित संघ और संस्था के उदाहरण हैं।

(i) विद्यालय (ii) राजनीतिक पार्टी

(iii) परिवार (iv) परिवार और क्रिकेट क्लब

आपने क्या सीखा

- समाज सामाजिक संबंधों का ताना-बाना है।
- समाज मानसिक संरचना है।
- समानता, अंतरनिर्भरता, सहयोग और संघर्ष समाज के गुण होते हैं।
- समुदाय एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में रहने वालो का एक समूह है।
- समुदाय के सदस्यों में अपनेपन की दृढ़ भावना होती है।
- समाज की तरह, समुदाय एक मूर्त अस्तित्व होता है।
- संघ विशिष्ट उद्देश्यों को पूर्ण करने वाले लोगों का संगठित समूह है।
- संघ प्रमुख नियम और अधिनियमों के द्वारा कार्य करता है।
- संस्था समूह कार्यों को करने के लिए आचरण संहिता स्थापित करती है।

शब्दावली

1. अमूर्तीकरण - मूर्त से अमूर्त से निष्पन्न विचार।
2. सामाजिक सम्बंध- समाज में एक या दो व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध।
3. प्रतिरूप- पुनरावर्ती प्रकृति का होना।
4. पूर्वापेक्षित- निर्माण पूर्व अपेक्षित वस्तु।
5. सामाजिक सद्भावना- सामाजिक समूहों के बीच शांति और प्रेम बनाए रखना।
6. सहयोग- व्यक्ति समूह के बीच सहयोग और आदान-प्रदान।
7. समता-समानता।
8. अन्तर-निर्भरता- विभिन्न उद्देश्यों के लिए व्यक्ति और समूह के बीच परस्पर निर्भरता।
9. जागरूकता- महसूस करना, सचेतनता।
10. प्रथा प्रमुख नियमों और मानकों का इसके सदस्यों द्वारा पालन किया जाना।
11. अलिखित- सामाजिक प्रतिमान, जिसे अंकित न किया गया हो किंतु लोगों के द्वारा समाज में स्वीकृत और अस्तित्व में हो।

पाठान्त प्रश्न

1. क्या समाज रातों रात बन गया? अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।
2. समाज और समुदाय के बीच अंतर बताइए।
3. संघ और समुदाय के बीच क्या अंतर है?
4. प्राथमिक संस्थाएँ क्या हैं? उदाहरण के द्वारा समझाएँ।
5. समाज का एक उदाहरण दीजिए और इसकी पूर्वापेक्षाओं को 100-200 शब्दों में समझाईये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

(1) समाज सामाजिक संबंधों का ताना-बाना होता है। (2) समानता (3) हाँ

5.2

(1) अ (2.) ब (3) स

5.3

a) 3 और 4 b) दो 2 c) दो 2 d) एक 1

5.4

1. 4 2. 1 3. हाँ 4. 4

पाठ्य पुस्तकें

आए एम. मकईवर और सी.एच.पेज : सोसाइटी (1983)
अंथोनी गिडेन्स : सोशिओलोजी (1998)
एच.एम. जॉनसन : सोशिओलोजी (1983)